ओम् शान्ति 19-6-19 मधुबन

परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक, लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले, साकार मात-पिता के कदम पर कदम रख सम्पूर्णता की मंजिल को प्राप्त करने वाले निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

यह जून मास हम सबकी अति प्रिय मीठी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती का स्मृति मास है। 24 जून 1965 के दिन मीठी माँ इस साकार वतन से अव्यक्त वतन वासी बनी। उनकी मीठी पालना, कुशल प्रशासन और मधुर शिक्षायें आज भी हम सबको प्रेरणायें देती रहती हैं। यह भी ड्रामा का वन्डरफुल पार्ट ही कहें जो स्थापना के कार्य को सम्पन्न करने तथा नई दुनिया की स्थापना के कार्य में तीव्रता लाने के लिए मीठी माँ पहले-पहले एडवांस पार्टी में चली गई। मीठा बाबा अभी तक भी उस हीरो पार्टधारी आत्मा को गुप्त में रख अपनी नई सृष्टि की रचना का कैसे कार्य करवा रहे हैं, यह तो अभी तक भी गुप्त है इसलिए भक्ति में भी सरस्वती का गुप्त नदी के रूप में ही यादगार चला आता है।

मीठी माँ की बहुत प्यार वा शिक्षाओं भरी मुरली तो आप सबके पास पहुंच गई होगी, जो 24 जून 2019, सोमवार के दिन सभी अपने-अपने क्लास में सुनायेंगे ही। सभी सेवाकेन्द्रों पर मीठी मम्मा के निमित्त 24 जून को विशेष भोग भी रखेंगे। मीठी माँ का प्रिय अंगूर भी सभी भोग में जरूर रखना जी। वैसे 23 जून रविवार के दिन भी मम्मा की विशेषताओं पर विशेष क्लास वा कार्यक्रम रख सकते हैं, जिसमें यज्ञ माता जगदम्बा सरस्वती के जीवन परिचय के साथ, उनके जीवन की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाल सकते हैं तथा उनकी मीठी शिक्षायें भी सुना सकते हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद... ओम् शान्ति।

मीठी जगदम्बा माँ की विशेषतायें

1) मम्मा का लौकिक नाम राधे था परन्तु जैसा नाम था वैसे राधे मुरली की मस्तानी थी, बाबा का एक एक शब्द बड़े प्यार से सुनती, समाती और उसे बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट कर सबको सुनाती इसलिए तो सरस्वती के हाथ में ज्ञान की सितार दिखाते हैं।

2) कभी कुछ भी बात हो जाये - ड्रामा का पाठ मम्मा को बहुत पक्का था। उसको साक्षी हो करके देखने की इतनी अच्छी आदत मम्मा की थी, जो कोई भी दृश्य को देखते कभी हलचल में नहीं आई। सदा एकरस मुस्कराता हुआ चेहरा रहता। हम सबको भी सदा नथिंगन्यु का पाठ पढ़ाकर अचल-अडोल बना देती।

3) मम्मा के चेहरे पर कभी फिकर के चिन्ह नहीं देखे, कोई शरीर भी छोड़ दे या अपने ही शरीर में कुछ हुआ तो भी ज्यादा सोच नहीं, मम्मा साधारणता से नहीं रहती थी। मम्मा को सदा बहुत ऊंचे रूहानियत के नशे में देखा।

4) मम्मा को बाबा ने कहा तुम लक्ष्मी बनेगी, बस, एक बारी कहने से मम्मा की सूरत तथा सीरत बदल गई। गुणवान बनना है, गुण देखना है, गुण दान करना है - इन तीन बातों में मम्मा पक्की थी इसलिए उनकी उम्र भल कम थी लेकिन धारणा में बड़ी होने कारण उनको सब बड़े-छोटे दिल से मम्मा कहने लगे, गुणमूर्त मम्मा सबसे नम्बरवन चली गई।

5) क्लास में हाज़िर रहना - ये भी बाबा का फरमानबरदार बच्चा बनना है लेकिन न केवल रेग्युलर बल्कि पंचुअल होना है। ज़रा भी ऊपर नीचे न हो - ये हमें मम्मा ने सिखाया। मुरली और सवेरे का योग कभी मिस न हो। जिसको बाबा ने कहा गफलत न करो, जिसे ओना होता है वो कभी गफलत नहीं करता है। बाबा कहते तुम ऊपर की स्थिति में रहो। नीचे की बातें क्यों करते हो? मम्मा के मुख से कभी ऐसी बातें नहीं सुनी। मम्मा बिल्कुल चुप रहती थी, जितना जरूरी है उतना बोला फिर चुप।

6) मम्मा में तीन विशेषतायें स्पष्ट दिखाई देती थी एक - रूहानियत दूसरा स्वमान और तीसरा बाप से सर्व सम्बन्ध का स्नेह। तो हमें भी इन्हीं तीन गुणों को स्वयं में धारण करना है, इससे देह-अभिमान सहज खत्म हो जायेगा।

7) मीठी माँ ने हम सब बच्चों को बड़े प्रेम से, इशारों से पालना दी। मम्मा का चित्त बिल्कुल साफ था। मम्मा हरेक बच्चे की बात दिल में ऐसे समा लेती थी जैसे कोई बात ही नहीं हुई। शिक्षायें देते हुए भी अन्दर समा लेना, समाने की शक्ति और प्यार से उसको चेंज कर देना - यह बहुत बड़ी विशेषता मम्मा में देखी। मम्मा ने कभी दूसरों के अवगुण अन्दर चित्त पर नहीं रखे।

8) मम्मा सदा अपने स्वमान में रहती थी, उन्हें बीजरूप स्थिति बनाने का, सब संकल्प समेट लेने का, विस्तार में न जाने का नैचुरल आर्ट था। समेटना, समा लेना। कभी कोई बात में विस्तार में आया हुआ नहीं देखा, जिस कारण मम्मा की मुरली बहुत प्रभावशाली होती थी। वह मम्मा की दिव्यता, सत्यता की आकर्षण चेहरे पर भी थी।

9) मम्मा सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली थी। उनका सदा यही लक्ष्य रहा कि मुझे सबके दु:ख दूर करने हैं। किसी भी हालत में, किसी भी बात में मम्मा को कभी क्रोध तो क्या, परन्तु आवेश भी नहीं आया। मम्मा का तेज आवाज कभी किसी ने नहीं सुना। मम्मा शान्ति की अवतार, प्रेम की मूर्त थी।

10) बाबा जो भी सुनाता, मम्मा उसे इतने ध्यान से सुनती जैसे उसी समय एक-एक बात का स्वरूप बनती जा रही है इसलिए मम्मा सदा अचल अडोल, एकरस स्थिति में रही। मम्मा की स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं देखी। पुरुषार्थ भी कोई मेहनत वाला हार्ड नहीं किया। मम्मा के चेहरे से सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही जगदम्बा के रुप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है।

11) मम्मा ने हम बच्चों की पालना करने में इतना सर्वोत्तम श्रेष्ठ पार्ट बजाया, इस कारण गॉडेज ऑफ नॉलेज कहलाई, यह टाइटिल मम्मा के सिवाए किसी को नहीं मिल सकता। शिवबाबा की नॉलेज को इतना धारण किया है तब विद्या की देवी बनी है, इसलिए विद्या धारण करने के लिए सरस्वती को याद करते हैं।

मीठी जगदम्बा माँ की अनमोल शिक्षायें

1) जो शिक्षा हम दूसरों को देते हैं, वह क्वालिफिकेशन्स हमारे में भी होनी चाहिए। बाकी वीकनेस कौनसी है, उसकी डिटेल में जाने की दरकार नहीं होती। जैसे कोई आदत है वा कोई ऐसी बात है जिसका असर शक्ल पर आ जाता है, जिसको देखकर, चाल-चलन को देखकर कोई महसूस करे कि यह ठीक नहीं है। तो वह आदत निकाल देनी चाहिए। यूं तो मन्सा वृत्ति का भी प्रभाव पड़ता है, तो उस पर भी ध्यान होना चाहिए।

2) अपने को छोटा समझना यह भी कमजोरी है। नानक नीच नहीं समझना है। न फिर अभिमान रखना है। कम से कम स्प्रिट ठीक रखनी है। नहीं तो अपने पांव पर ठहर नहीं सकेंगे। स्प्रिट में रहो। मनुष्य क्या नहीं कर सकता है। यह हमारे बड़े हैं - यह तो काम धन्धों में कहकर चलना पड़ता है। इसका मतलब यह नहीं समझना कि हम नींच है। सतयुग में भी यह नहीं कि हम राजा हैं, यह प्रजा है। वह भी नेचरल सम्बन्ध है। ऊंच नींच की इसमें बात नहीं है। अपने पांव पर खड़ा रहना है। मैं शक्ति हूँ, ऐसा समझकर चलना है।

3) ट्रस्टी और सरेन्डर - इन दोनों में सर्वोत्तम स्टेज वह है जो कोई में परतन्त्र न हो। मन की भी परतन्त्रता न हो। उसके लिए ताकत भरनी चाहिए। जो वास्तविकता है, उसमें कोई परतन्त्रता नहीं होती। चाहे हम किसको खींच रहे हैं, चाहे कोई हमें खींच रहा है। यह सब निकल जाना चाहिए। बाकी कोई कहे मेरे आगे कोई बात आवे ही नहीं, यह तो हो नहीं सकता। आयेगी तो जरूर। लेकिन अपनी धारणा हिम्मत और साहस चाहिए।

4) हमारे बोलने का, शब्दों का भी मैनर्स चाहिए। भाषा भी अच्छी चाहिए। बात करने की टैक्ट भी आनी चाहिए। कोई मान का, इज्जत का भूखा है, कोई नाम शान का भूखा है....उसे परखकर उस तरीके से उसे हैण्डल करना है। उसके संस्कारों को भी देखना है, इन सबमें बुद्धि चमत्कारी चाहिए।

5) हमें अपने बोलचाल पर बहुत ध्यान देना है। तुम कहेंगे हमने तो यह अक्षर कोई ख्याल से नहीं कहा, परन्तु हर एक के साथ कैसे बात करनी चाहिए, वह भी सीखना है। हर एक समझे कि वातावरण को ठीक करने के हम जिम्मेवार हैं क्योंकि वातावरण से ही अवस्था बिगड़ती है। तो इस पर बहुत अटेन्शन रखना चाहिए।

6) हमारी एम यही रहे कि सबका कल्याण करें। अपनी तरफ से जितना हो सके मेहनत करनी चाहिए। सभी एक जैसे नहीं बनते, सब वैरायटी है। कोई तन से मददगार बनेगा, कोई मन से, कोई धन से मददगार बनेगा। तो हमको उस वैरायटी से वैरायटी मदद लेनी है। जितनी हद में चल सकें उतना उन्हें चलाना है।

7) जैसे डाक्टर कमजोर पेशेन्ट को दवा भी समझ से देता है। नहीं तो नुकसान हो जावे। यहाँ भी हर बात में बुद्धि चाहिए। हर चीज़ का अन्दाज़ होना चाहिए। जिसका अटेन्शन मुरली में नहीं है तो समझो कि इसकी वृद्धि नहीं हो सकती, उसने जड़ को नहीं पकड़ा है। फाउन्डेशन नहीं तो इमारत कैसे बनेंगी।

8) हर एक में क्लास का इन्ट्रेस्ट पैदा करो। दूसरों की भूलों को नहीं देखो परन्तु हमारे में क्या कमी है, वह देखना है। ज्ञान स्नान सबके लिए है। तो सबको क्लास में बैठना चाहिए। ऐसे तो हम भी मुरली आपेही पढ़ सकते हैं। ज्ञान स्नान का यह मतलब नहीं है कि सिर्फ क्लास में आवें, परन्तु उन्हें कुछ मिलना चाहिए। अगर उनको कुछ नहीं मिलेगा तो काम कैसे चलेगा। तो यह सब चीजें धारणा में लानी हैं।

9) भल कोई कैसा भी हो - कभी यह नहीं कहना चाहिए कि यह तो ऐसा है, यह सुधरेगा नहीं। ऐसा समझने से उनका तो जीवन चला गया। उनको तो हमको सुधारना है। हमारी रेसपान्सिबिल्टी बहुत बड़ी है।

10) आप लोग अपने घरों में रहते हैं, घर से एक भाती (मेम्बर) आता है दो नहीं आते, तो अपनी एक्टिविटी ऐसी निराली रखनी है जो आजू-बाजू वाले भी समझें कि यह बी.के. पास जाते हैं। तो वह देखें कि हम भी घर-गृहस्थ में रहते हैं, यह भी रहते हैं लेकिन इन्हों का सब निराला है, यह तो सदा खुश रहते हैं।

11) हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं तो वह निशानियां स्वयं में आनी चाहिए। ऐसे नहीं बस जैसे हैं वैसे बनेंगे। नहीं। हम दांव लगाते हैं कि हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो देखना है कि हमारी चलन भी ऐसी है।

12) ऐसे नहीं कोई भूल होती है तो कह दो कि हम तो पुरुषार्थी हैं लेकिन कोई भूल न हो, इसका पुरुषार्थ रखना है क्योंकि सारा खाता इससे जमा होता है। ऐसे नहीं खाया, पिया बस। लेकिन यह देखना है कि आज हमने किसकी सेवा की? किसको धन दिया? अच्छा दूसरे को दु:ख नहीं देते हैं, लेकिन किसी आत्मा की सेवा की, किसको शान्ति दी? ज्ञान दान देते हो तो उसका भी फल मिलता है।

13) जिसमें हमारी कमाई बढ़ती रहे वह सेवा करनी है। तन-मन-धन में जितनी ताकत है वह सेवा करनी है। जितनी शक्ति से कर सकते हैं तो क्यों न करें! ऐसे पुरुषार्थी छिपे नहीं रहेंगे।

14) ऐसे नहीं सिर्फ कहना कि एक बार भूल हो गई, आगे के लिए नहीं करेंगे। रजिस्टर भी तो अपना अच्छा रखना है। वह भी फाइनल एग्जैम में मार्क्स जमा होंगी। अपनी चाल से पता पड़ेगा कि मेरा पुरुषार्थ कितना हड्डी (दिल से) है। पुरुषार्थ माना भूलों से बचकर चलना। अपनी चलन अच्छी रखना।

15) अपनी प्रैक्टिकल जीवन में पूरी परहेज रखो। पहले तो 5 विकारों पर पूरी जीत पानी है। भल गृहस्थ व्यवहार में, बाल बच्चों के सामने रहते, कहाँ क्रोध भी करना पड़ता है। परन्तु उस समय यह चेकिंग करनी है कि मैं यह क्रोध का एक पार्ट बजा रही हूँ, बच्चों को भी डांटना है परन्तु ऐसा न हो कि डांटने समय अवस्था नीचे ऊपर हो जाए। उससे विकर्म बनते हैं। बाकी बच्चों के कल्याण लिए साक्षी हो, अपनी मूड को चेंज करना है जिससे वह समझें कि यह डांट रहे हैं। तो कहाँ बाहर से एक्टिंग सीरियस रखकर भीतर हर्षितमुख रहना है। ऐसे समझना है कि मैंने जान बूझकर क्रोध किया है। मतलब ज्ञान से सावधानी से चलना है, सोल कान्सेस रहना है। यही प्रैक्टिकल जीवन है।

16) हमारे सामने कितने भी उपद्रव हों, कभी भी मुख से यह न निकले कि हाय यह क्या हो गया! हाय, हे भगवान आदि यह शब्द नहीं निकलने चाहिए। हमको तो पूरा निडर बनना है। ऐसी अवस्था बनानी है जैसेकि हमने सब पहले से ही देखा हुआ है। हृदय बड़ा रखना है ताकि जो कुछ आये सहन कर सकें। हर हालत में हमारा वही सहारा है, उससे हमारा बहुत स्नेह चाहिए।

17) योग ऐसी नेचरल चीज़ है। उसमें बुद्धि की लगन ऐसी लगावें जो हटाने से भी न हटे। उस समय जो भी विघ्न आवें उसको ऐसे पार करो जैसे पानी पर लकीर। टाइम वेस्ट मत होने दो। अपनी मन्सा को पूरा सम्भालना है, मन्सा शक्ति जमा करना है।

18) कोई के व अपने पुराने संस्कारों को नहीं देखना है। अब तो नया ही भरते जाना है। एक दो का शुभचिंतक रहना है। जिसमें कोई अच्छा गुण है, वह उठाना है। अवगुण को नहीं देखना है। इस समय हम आत्मा को ही देखते हैं, फिर चाहे धनवान हो, चाहे गरीब हो। संस्कारों को पलटाने के लिए ही टैम्पटेशन देनी पड़ती है।

19) ऐसा भी समय आना है जो आपस में मिल भी नहीं सकेंगे। पापों का बोझ उतारने के लिए टाइम चाहिए इसलिए शुभ कार्य में देरी मत करो। आज का काम अभी कर लो। भविष्य श्रेष्ठ बनाने का समय अभी है, इसका पूरा कदर होना चाहिए। इस अन्तिम जन्म में यह दिन बहुत अच्छे हैं, जो धारणा की है उसकी परीक्षा भी इस जन्म में देनी है। इस ही जन्म में माया के तूफान विघ्न डालते हैं इसलिए डरो मत क्योंकि तुम तो जानते हो कि यह तो होना ही है।

20) अभी हम नई दुनिया के लिए निमित्त हैं इसलिए अब हमको जो कुछ भी करना है वह नई दुनिया के लिए करना है। जैसे बाबा नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश कर रहे हैं, तो हम भी उनके साथ हैं। हम जीते जी पहले से ही बुद्धि से इस दुनिया का विनाश कर देते हैं। अब हमको इन्डिविज्युअल अपने संस्कारों को परिवर्तन में लाने का पुरुषार्थ करना है। आत्मा को पूरा प्योर रिफाइन करना है, जिससे फिर नई दुनिया का आरम्भ होगा। अभी हमारी आसक्ति इस दुनिया में कहीं नहीं जानी चाहिए। अभी तो हमारी बुद्धि वापिस लौटने में लगी हुई है। यह दुनिया तो अब पिछाड़ी की श्वांस ले रही है। मुर्दो से दिल थोड़ेही लगानी है।

21) अपनी अवस्था की डिग्री देखते जाओ कि पुरानी दुनिया से आसक्ति टूटती जाती है! अगर टूटती जाती है तो समझो कि हम नई दुनिया का बन रहा हूँ। अब दैवी प्यार में भी अटकने की बात नहीं। यहाँ के मान मर्तबे और प्यार में दिल नहीं अटकानी है। नहीं तो प्रालब्ध में टोटा (विघ्न) पड़ जायेगा। दैवी प्यार के संग की मदद तो इस कर्मातीत अवस्था को पाने लिए ही है, इन बातों की गहराई में जाना है, यही हार्ड पुरुषार्थ है।

22) देह अभिमान की बड़ी सूक्ष्म बातें आती हैं इसलिए ऐसे मत समझो कि सिर्फ परिवार को बदलना है। अपने देह अभिमान की चाल को भी बदलना है। अब हमारे दिल में तो यही है कि जायें तो पूरी इज्जत से जायें। जैसे पुराने कर्म बन्धन से मरे हो, ऐसे दैवी परिवार से भी मरना है। शुद्ध अशुद्ध देह की लागत से अभी पूरा पार जाना है। किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष नहीं रखना है। अभी तो कर्मातीत अवस्था को पाना है। अपने पुरुषार्थ का भी अहंकार नहीं रखना है। हम अभी ऊंच विचारों वाले हैं इसलिए छोटे-छोटे विचारों में मत पड़ो।

23) अभी बुद्धि में यह हौंसला रखना है कि परमात्मा बाप, टीचर, सतगुरू रूप से हमें पढ़ा रहे हैं। जैसे बाप बच्चे का प्रैक्टिकल रिश्ता होता है। पारलौकिक बाप पारलौकिक भी है तो लौकिक भी है, क्योंकि अभी तो परलोक से इस लोक में आया है। अभी इस लोक में उपस्थित है, तो वह रिश्ता होना चाहिए। इसमें सब नाते रिश्ते आ जाते हैं। यह चैतन्य में है तो इनसे निभाना है। मन-वचन-कर्म से प्रैक्टिकल में आना है।

24) बाबा ने जो लक्ष्य दिया है कि हम सो, तो इसका मतलब यह है कि हम पहले सो सम्पूर्ण आत्मा, फिर देवता, तो पहले अपनी उस सम्पूर्ण आत्मा की स्टेज को पकड़ना है। पूरा बन्धन मुक्त हो, जो थे, जैसे थे, वैसे बाबा का बनना है। इस समय बाबा की जो नॉलेज मिल रही है वह है ही अपनी सम्पूर्ण आत्मा की स्टेज को पकड़ने के लिए। जितना-जितना जो पकड़ेगा उसके आधार पर ही फिर प्रालब्ध मिलेगी। अच्छा!

ओम् शान्ति।